राष्ट्रीय सहारा हिन्दी दैनिक
28-9-2015 पृष्ठ सं० 2

कृषि लागत कम करने की जरूरत : सीएसआईआर

नई दिल्ली (वार्ता)। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक त्रिलोचन महापात्र ने कृषि का औद्योगिकरण करने की आवश्यकता पर बल देते हुए वैज्ञानिकों को कहा कि प्रौद्योगिकी को कटौत्तर खेती की लागत को कम कर उत्पादन बढ़ाने तथा उत्पादों को गुणवत्ता में वृद्धि कर इसे लाभ का सौदा बनाया जा सकता है।

डा.महापात्र ने यहां देश के प्रतिष्ठित किसानों के नवाचारी कृषक सम्मान को सम्बोधित करते हुए कहा कि किसान अब बेहतर जीवन स्तर के लिए खेती छोड़कर दूसरे धंधों में जाना चाहता है। उन्होंने कहा कि देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का हिस्सा मात्र 15 प्रतिशत है जबकि खेती से 50 से 60 प्रतिशत लोग जुड़े हैं। प्रौद्योगिकी के कटौत्तर पांच दस वर्षों में ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी कि लोग खेती छोड़कर दूसरे काम से जुड़ जायेंगे। अमेरिका और कुछ अन्य पश्चिमी देशों में पांच से दस प्रतिशत लोग ही कृषि से जुड़े हैं।

> ■ बेहतर जीवन स्तर के लिए खेती छोड़कर दूसरे धंधों में जाना चाहता है किसान

महापात्र ने कहा कि जनसंख्या लगातार बढ़ रही है और भोजन की आवश्यकता लगातार बढ़ती जायेगी। इसलिए किसी न किसी को खेती करनी ही होगी। उन्होंने कहा कि कृषि को उद्योग और बाजार से जोड़ना ही होगा ताकि किसानों की आय में वृद्धि हो सके। महाराष्ट्र में किसान गन्ना, अंगूर, अनार और कई अन्य फलों की व्यावसायिक खेती करते हैं और उन्हें इसका भरपूर फायदा भी मिलता है। इसी प्रकार बासमती धान की पैदावार करने वाले किसान बेहतर आय अर्जित कर रहे हैं क्योंकि उन्हें अंतरराष्ट्रीय बाजार मिला हुआ है। महापात्र ने कहा कि अच्छी पैदावार और लाभ के लिए किसानों को परम्परागत कृषि की जगह आधुनिक कृषि को अपनाना होगा। उन्होंने कहा कि परम्परागत कृषि और आधुनिक कृषि में कोई झगड़ा नहीं है बल्कि यह देखने की जरूरत है कि परम्परागत कृषि विज्ञान सम्मत है या नहीं। यदि ऐसा नहीं है तो इसमें बदलाव की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि देश के अलग अलग हिस्सों में प्रगतिशील किसानों ने अपने अभिनव प्रयोग से कृषि को एक नई दिशा दी है खेती में क्रांतिकारी बदलाव लाया है। ऐसे किसानों पर शोध तथा उनकी सफलता की कहानी को लिपिबद्ध करने की जरूरत है ताकि अन्य किसान इसका लाभ उठा सकें। उन्होंने कहा कि कृषि में मजदूरी की बहुत जरूरत होती है जिसके कारण इसकी लागत काफी अधिक हो जाती है। यदि इसका मशीनीकरण कर दिया जाए तो कृषि लागत को काफी कम किया जा सकता है। उन्होंने मिट्टी जांच अभियान और प्रधानमंत्री सिंचाई योजना को खेती के लिए महत्वपूर्ण बताया।